मेरी अपनी दुनिया

विष्णु चिंचालकर

अजी, कभी मेरे घर नहीं पधारे! आपने तो केवल सुन ही रखा है कि मेरा घर एक अजीब-सा कबाड़खाना है। कई तरह का अटाला और कई प्रकार की ऊट-पटाँग चीज़ें जहाँ-तहाँ बिखरी हुई आपको दिखाई देंगी... वगैरह-वगैरह। वास्तव में, इसमें झूठ कुछ भी नहीं है। परन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इसी कबाड़-खाने में आपको कुछ दिलचस्प बातें भी दिखाई देंगी। इतना ही नहीं वे ऊट-पटाँग चीज़ें आपका मनोरंजन भी करेंगी। और उन्हीं चीज़ों को घुमा-फिराकर यदि मैं कुछ करतब कर दिखाऊँ तो आप अचम्भित भी हो सकते हैं। परन्तु हाँ, केवल मनोरंजन या अचम्भित करना ही मेरा इरादा नहीं है। उसके परे भी जो एक विचार है उसे आप तक पहुँचाने के लिए ही यह सारी उधेड़-बुन है।

वैसे इस कबाड़-खाने में कोई भी परिचित या अजनबी आता है तो मेरे ये साथी (हाँ, अब ये सारी चीज़ें मेरे लिए निर्जीव अटाला नहीं हैं।) स्वयं ही अपना परिचय दे देते हैं। परन्तु उनकी कुछ छिपी हुई खूबियाँ विस्तारपूर्वक बताने में मैं ज़रा भी आनाकानी नहीं करता। मेरे इस उत्साह का मित्रों द्वारा मज़ाक भी उड़ाया जाता है। पर मैं हूँ कि बाज़ नहीं आता। मेरा आम की गुठली से बना चित्र देखने के बाद अगर कोई व्यक्ति आम खाने के बाद गुठली फेंक देने के पहले रुक कर, एक क्षण के लिए भी उसे गौर से निहारता है तो इसे मैं अपनी आँशिक सफलता मान सकता हूँ। परन्तु, मेरी टूटी हुई चप्पल की मोनालिसा देखने के बाद अपनी टूटी चप्पल यदि कोई मेरे ही पास भेज दे तो फिर सिवाए माथा ठोक लेने के मैं कर भी क्या सकता हूँ।

"भई, यह तो आपकी नज़र है। हम कहाँ देख सकते हैं। अपने तो बूते की बात नहीं।" इस प्रकार की दलील का मतलब है प्रयास करने की झंझटों से छुटकारा।

मैं तो हमेशा ही कहता हूँ कि इस प्रकार की नज़र केवल मेरी ही बपौती नहीं है। हर बच्चे के पास यह होती है। मैं वही बातें तो करता हूँ जो बचपन में एक बच्चा भी करता रहता है। जब वह पकौड़ी में मुर्गा या बतख की शक्लें देखकर माँ को दिखाता है। और ऐसा करने पर उसे मिलती है चपत। और यदि मैं गुठली में सुअर या किसी साधु का चेहरा दिखाता हूँ तो मेरी नज़र की तारीफ होती है। यह भी कोई न्याय है? सड़क पर या बगीचे में घूमते हुए अजीब-सी लगने वाली चीज़ें वह भी बटोरता है और मैं भी। क्या फर्क है? फर्क तो केवल उसे पेश करने के तरीके में है। वो ऐसा हो कि उन्हीं चीज़ों को बड़े भी समझ पाएँ।

हर बच्चे में, और इसीलिए हर व्यक्ति में यह नज़र प्रकृति ने दे रखी है। लेकिन इस बात की जानकारी, यह अहसास उसे नहीं होता और न कभी वह उसे जानने का प्रयास ही करता है। अब साधारण-सा उदाहरण लें।

जब मैं दर्शकों को अपनी कृतियाँ दिखाता हूँ तो आमतौर पर उनकी एक ही प्रतिक्रिया मुझे दिखाई देती है। बादलों में तथा पानी के धब्बों के कारण या रंगों की परतें उखड़ जाने के कारण बिगड़ी हुई पुरानी दीवारों पर दिखाई देने वाले चित्रों को स्वीकारना। अब ज़रा गौर कीजिए, क्या वास्तव में वहाँ चित्र होते हैं? वहाँ तो होते हैं बादलों के कुछ टुकड़े और धब्बे! बस, इसी के सहारे तो अपने मनचाहे और परिचित चित्रों का निर्माण अपनी-अपनी कल्पनाशक्ति के सहारे हर व्यक्ति कर लेता है। हर व्यक्ति के अन्दर एक छिपा हुआ चित्रकार होता है। वही तो यह चित्र बनाता है। उस छुपे हुए चित्रकार को प्रगट होने के लिए आसमान के बादल या दीवारों के धब्बे बहाना मात्र हैं।

किसी चीज़ पर दूसरी चीज़ के टकराने पर उसमें से आवाज़ निकलती है यह तो हम सब जानते हैं। यदि चीज़ ठोस होती है तो एक प्रकार की आवाज़ निकलेगी। धातु की हो तो अलग आवाज़ निकलेगी, मतलब जिस जाति की आवाज़ प्रकृति ने उसमें दे रखी है वही तो निकलेगी। परन्तु यह आवाज़ छिपी हुई होती है। उसे प्रकट होने के लिए बाहर की किसी टकराहट की ज़रूरत होती है। कहावत भी है, एक हाथ से ताली नहीं बजती। तो इस प्रकार की टकराहट करने के लिए, अन्दर की छिपी शक्तियों को प्रगट करने के लिए हमारे आसपास के वातावरण की हरेक चीज़ तैयार है।

ये कलाकृतियाँ भुट्टा, गुठली नारियल, नल, पेड़ के तने की चकतियों जैसी चीज़ों से बनी हैं। क्या तुम बता सकते हो कि यहाँ दिख रहे हिरण, शेर, बारहसिंगा, ईसा मसीह को किन-किन चीज़ों से बनाया गया होगा?

विष्णु चिंचालकर जो गुरुजी के नाम से जाने जाते हैं पर बनी एक फिल्म का लिंक:
http://video.google.com/videoplay?docid=8169282490470393550&hl=en